तीन पत्ती गुलाब-36

“मैं गौरी की चूत चोद चुका था, अब उसकी गांड की चुदाई का मौक़ा ढूँढ रहा था. आज मेरी पत्नी पूरी रात के लिए शादी में जाने वाली है तो मौक़ा बन सकता है. ...”

Story By: prem guru (premguru2u)
Posted: Wednesday, September 25th, 2019
Categories: हिंदी सेक्स स्टोरी
Online version: तीन पत्ती गुलाब-36

Copyright © Antarvasna part of Indian Porn Empire

तीन पत्ती गुलाब-36

 यह कहानी सुनें

मैं दफ्तर जाने के लिए तैयार होने बैडरूम में चला आया और गौरी रसोई में।
पूरा दिन गौरी के नितम्बों के बारे में सोचते ही बीत गया।

शाम को जब मैं घर आया तो रास्ते में देखा कि गुप्ताजी का घर रंगीन रोशनी से जगमगा रहा था।

घर आकर जब मैंने इस बाबत मधुर से पूछा तो उसने बताया- गुप्ताजी की बेटी नेहा की कल शादी है। चौमासे के दिनों में अमूमन शादी-विवाह के मुहूर्त नहीं हुआ करते पर लगता है बड़ी मुश्किल से यह रिश्ता मिला है कोई गड़बड़ ना हो जाए इसलिए गुप्ताजी ने लड़के वालों को अपने स्वास्थ्य का हवाला देकर जल्दी ही शादी का मूहूर्त निकलवा लिया था।

गौरी की तबियत आज कुछ ठीक नहीं लग रही थी, वह अपने कमरे में सोने चली गई थी।

खाना निपटाने के बाद मधुर और मैं टीवी देखने लगे। आज मधुर कुछ ज्यादा ही खुश नज़र आ रही थी।
“आज शाम को सामने वाली नेहा आई थी।” मधुर ने बताया।
“कौन नेहा ?”
“वही गुप्ताजी की बेटी जिनकी बात अभी मैंने बतायी कि शादी है ! 3 नंबर ब्लाक में !”
“ओह … अच्छा ? वो पूपड़ी ? क्या बोल रही थी ?”

“कल उसकी शादी है तो मुझे विशेष रूप से सारे दिन अपने साथ रहने की रिक्वेस्ट करने आई थी। और बोल रही थी कल रात में भी आप विदाई तक मेरे साथ ही रहना मुझे बहुत

घबराहट सी हो रही है।"
"हम्म …" मुझे भी हंसी आ गई।

"पता है और क्या बोल रही थी ?" मधुर ने हँसते हुए कहा।
"क्या ?"
"बोलती है दीदी मुझे तो बहुत डर लग रहा है।"
"शादी में डरने वाली क्या बात है ?"
"अरे … आप भी ना … वो बोल रही थी मुझे सुहागरात में जो होगा उससे डर लग रहा है." कह कर मधुर जोर-जोर से हंसने लगी।

"अच्छा फिर ?"
"पूपड़ी है एक नंबर की। बोलती है कि मैंने सुना है सुहागरात में पहली बार में बड़ा दर्द भी होता है और खून भी निकलता है ? मुझे तो बहुत डर लग रहा है। क्या सच में बहुत दर्द होता है ?"
सुनकर मेरी भी हंसी निकल गई।

"35-36 साल की हो गई है और ऐसे नाटक कर रही है जैसे 19 साल की हो."
"फिर तुमने क्या बोला ?"
"बोलना क्या था मैंने उसे बोला तुम तो बस चुपचाप अपनी टांगें चौड़ी करके लेट जाना फिर जो करना होगा तुम्हारा पति अपने आप कर लेगा." कहकर मधुर ठहाका लगा कर हंसने लगी।

"तुमने अपने दाव-पेंच नहीं बताये क्या उसे ?"
"ए … हे … हे … मेरे जैसी सीधी थोड़े ही होती हैं सभी लड़कियाँ ? मुझे तो तुमने ठीक से मनाया भी नहीं उस रात ? हूंह …" कहकर मधुर ने नाराज़ सा होने का नाटक किया।
"आओ आज मना लेता हूँ।" कहकर मैंने मधुर को अपनी बांहों में भरने की कोशिश की।

“हटो परे ! वो.. वो … गौरी देख लेगी ।” कहकर मधुर शर्मा सी गई ।

“अरे … हाँ वो गौरी को क्या हुआ आज ?” मैंने पूछा ।
“पता नहीं उसकी तबियत सी ठीक नहीं है । ये खाने पीने का ध्यान नहीं रखती । सिर दर्द और पेट की गड़बड़ बता रही है । बोलती है कि जी खराब है । आज खाना भी नहीं खाया ।”
“ओह … ”
हे लिंग देव ! कहीं लौड़े तो नहीं लग गए … कुछ गड़बड़ तो नहीं हो गई । गौरी तो बता रही थी उसके पीरियड्स आने ही वाले हैं ! फिर यह जी मिचलाने वाला क्या किस्सा है ?

अचानक मुझे अपने कानों के पास मधुर की गर्म साँसें सी महसूस हुई । इससे पहले की मैं कुछ समझ पाता मधुर ने मेरे कानों की लोब को अपने मुंह में लेकर दांतों से हल्का सा काट लिया । आज मधुर बहुत चुलबुली सी हो रही थी ।

प्रिया पाठको और पाठिकाओ ! स्त्री कभी भी खुलकर प्रणय निवेदन नहीं करती है । वह तो बस इशारों में ही बहुत कुछ कह देती है । अब मेरे लिए उसके इशारे समझना इतना भी मुश्किल काम नहीं था ।

मैंने मधुर को अपनी गोद में उठा लिया और फिर हम अपने बैडरूम में आ गए ।
और उसके बाद मधुर ने आज जी भर के 2 बार चुदवाया । दूसरी बार तो उसने खुद मेरे ऊपर आकर किया ।

दोस्तो ! अब मैं इसे विस्तार से बताकर आपको बोर नहीं करना चाहता । हाँ यह बात अवश्य सांझा करूंगा के मधुर के साथ सम्बन्ध बनाते हुए भी मुझे यही लग रहा था जैसे गौरी मेरी बांहों हो और वह कह रही हो मेरे साजन … आज मेरी गोद भराई करके मुझे पूर्ण स्त्री बना दो ।

सुबह मधुर ने स्कूल से फिर बंक (छुट्टी) मार लिया. बहाना पूपड़ी की शादी का था। सच कहूं तो मुझे और गौरी दोनों को आज की रात का बेसब्री से इंतज़ार था।

दिन में लगभग 2 बजे मधुर का फ़ोन आया उसने बताया कि वह गुप्ताजी के यहाँ जा रही है और रात को भी विदाई तक वही रहेगी।
हे लिंग देव ! आज तो तेरी सच में जय हो। आज ऑफिस से घर जाते समय तुम्हें एक सौ एक रुपये का प्रसाद जरूर चढाऊँगा।

एक तो साली यह नौकरी भी आदमी के लिए फजीहत ही होती है। जब भी घर जल्दी जाने का होता है कोई ना कोई काम ऐसा आता है कि चाहते हुए भी ऑफिस से नहीं निकला जा सकता।
आज हैड ऑफिस में स्टॉक की रिपोर्ट भेजनी थी। सम्बंधित क्लर्क आया नहीं था तो नताशा के साथ मिलकर रिपोर्ट तैयार करके मेल करते-करते 7:30 बज ही गए। मेरा तो मन कर रहा था उड़कर ही घर पहुँच जाऊं।

जब मैं घर पहुंचा गौरी बाहर मुख्य दरवाजे पर मेरा इंतज़ार ही कर रही थी। मेरे अन्दर आते ही गौरी ने अन्दर से सांकल लगा ली। मैंने अपना बैग टेबल पर फेंक दिया और मधुर को आवाज लगाई। वैसे तो मुझे मधुर ने बता दिया था कि वह आज शाम को गुप्ताजी के यहाँ जाने वाली है पर मैं पूरी तसल्ली कर लेना चाहता था।

“दीदी तो आपकी पूपड़ी की शादी में गई हैं।” गौरी ने हंसते हुए बताया। (गौरी की भाषा तोतली ना लिख कर स्पष्ट लिख रहा हूँ.)
“अच्छा … वह मेरी … पूपड़ी कब से हो गई ?” कहते हुए मैंने गौरी को अपनी बांहों में भर लिया। गौरी तो उईईइ … करती ही रह गई।
अब हम दोनों सोफे पर बैठ गए।

“ओहो … रुको … आपके लिए पानी लाती हूँ.”

मेरा लंड पैंट में ही उछलकूद मचाने लगा था। गौरी पानी लेने रसोई में चली गई। आज उसने सलवार सूट पहन रखा था जिसकी कुर्ती बहुत कसी हुई थी। आँखों में काजल भी डाल रखा था और ऐसा करने से उसकी आँखें किसी कटार की तरह लगने लगी थी।

लगता था वह अभी थोड़ी देर पहले ही नहाकर आई है और उसने आज कोई बढ़िया परफ्यूम भी लगाया है। आज उसने बालों की दो चोटियाँ भी बना रखी थी। आप तो जानते ही हैं मधुर जब बहुत खुश होती है और उसे कोई काम करवाना होता तब वह इस प्रकार बालों की दो चोटियाँ बनाती है। आज तो गौरी ने भी दो चोटियाँ बनाई हैं हो सकता है यह संयोग मात्र रहा हो पर मेरा दिल तो अभी से जोर-जोर से धड़कने लगा था।

गौरी पानी ले आई और थोड़ी परे सी हटकर बोली- चाय बना दूं?
“किच्च … आज चाय पानी कुछ नहीं बस तुम मेरी बांहों में आ जाओ।” कहकर मैंने गौरी का हाथ पकड़ कर अपनी ओर खींचा।

गौरी का संतुलन बिगड़ सा गया और वह मेरी गोद में आ गिरी। वह थोड़ा कसमसाई तो जरूर पर उसने मेरी गोद से हटने की ज्यादा कोशिश नहीं की। मेरा लंड पैंट के अन्दर ठुमके लगाने लगा था जिसे गौरी ने भी महसूस कर लिया था। उसने थोड़ा सा ऊपर होकर अपने नितम्बों को मेरी गोद में सेट कर लिया। मैंने उसके गालों पर एक चुम्बन ले लिया।

“ओह … आप फिल शरारत करने लगे?”
“गौरी मेरी जान आज पूरे दिन ऑफिस में मैं बस तुम्हें ही याद करता रहा.”
“क्यों?” गौरी ने मेरी ओर तिरछी नज़रों से देखा।
वह मंद-मंद मुस्कुरा भी रही थी।

“गौरी तुम बहुत खूबसूरत हो मेरी जान !”
“बस … बस झूठी तारीफ़ रहने दो … आप कपड़े चेंज कर लो। मैं चाय बनाती हूँ, वैसे खाना भी तैयार है आप बोलो तो गर्म करके लगा दूं ?”
“गौरी तुम्हें अपनी बांहों से अलग करने का मन ही नहीं हो रहा.”
“क्यों ?”
“मेरा मन तो करता है सारी रात तुम्हें ऐसे अपने सीने से चिपकाए रखूँ।”

गौरी ने कोई जवाब नहीं दिया। पता नहीं गौरी क्या सोचे जा रही थी। उसके चहरे पर एक अनजानी सी मुस्कराहट के साथ-साथ भय भी नज़र आ रहा था। जैसे वह किसी निर्णय के लिए अपने आप को तैयार कर रही हो।
“आप पहले फ्रेश हो लो.” कहकर गौरी ने अपनी आँखें बंद कर ली और अपनी मुंडी झुका ली।

मैं बहुत कुछ सोचते हुए कपड़े बदलने बैडरूम में चला आया। पहले तो मेरा मन हाथ मुंह धोने का ही था पर बाद में मैंने एक शॉवर ले लिया और अपने पप्पू को साबुन से धोकर उस पर सुगन्धित क्रीम भी लगा ली। मैंने कुर्ता पायजमा पहन लिया था।

जब तक मैं हॉल में आया गौरी चाय बना कर ले आई थी। मेरा इच्छा चाय पीने की कतई नहीं थी मैं तो जल्द से जल्द गौरी के साथ अपने प्रेम का अंतिम सोपान पूरा कर लेना चाहता था। पर आप तो जानते हैं स्त्रियां जल्दबाजी में कोई भी काम करना पसंद नहीं करती हैं।

अब चाय पीने के मजबूरी थी।
“गौरी … ”
“हओ ?”
“पता नहीं क्यों मेरा मन आज तुम्हें अपनी बांहों में भरकर रखने को कर रहा है।”

“नहीं मैं आज कोई शरारत नहीं करने दूँगी.”

“गौरी तुम्हें ज़रा भी दया नहीं आती ?”
“कैसे ?”
“क्यों मुझे तड़फा रही हो ?”
“मैंने क्या किया ?”
“तुमने मुझे अपना दीवाना बना लिया है। ए गौरी ! आओ ना मेरी बांहों में आ जाओ … प्लीज …”
“आप पहले खाना खा लो, फिर सोचेंगे ?” गौरी ने रहस्यमई ढंग से मंद-मंद मुस्कुराते हुए कहा।

आप मेरे दिल, दिमाग और लंड की हालत का अंदाज़ा लगा सकते हैं।
“चलो ठीक है पर आज खाना हम दोनों साथ-साथ खायेंगे और वह भी तुम्हें अपनी गोद में बैठाकर !”
“हट !” गौरी ने शरमाकर अपनी मुंडी झुका ली थी।
ईईइ … स्स्स्सस …

याल्लाह … उसकी आँखों की चमक, गालों की लाली और उन पर पड़ने वाले डिम्पल तो आज जानलेवा ही थे। मुझे तो लगने लगा था कि उसकी यह अदा मेरा कलेजा ही चीर देंगे। मेरा दिल इतना जोर से धड़क रहा था कि मुझे लगने लगा साला यह कहीं धोखा ही ना दे दे।

गौरी ने खाना लगा दिया था और अब मैंने गौरी को अपनी गोद में बैठा लिया।

आज गौरी ने मेरे लिए खीर बनाई थी। हम दोनों ने एक दूसरे को खाना खिलाया और बीच-बीच में मैं उसके गालों को भी चूमता रहा और नितम्बों और उरोजों पर भी हाथ फिराता

रहा।

हमने जल्दी खाना निपटाया और फिर गौरी जूठे बर्तन लेकर रसोई में चली गई। मैं तो चाहता था गौरी जल्दी से आ जाए और इसी सोफे पर उसे मोरनी बनाकर प्रेम का अंतिम सोपान जल्दी से जल्दी पूरा कर लूं।

दोस्तो ! दिल थाम लेना अब वो मरहला आने वाला है जिसका मैं पिछले 2 महीनों से करता आ रहा था। ये दो महीने नहीं जैसे दो सदियों के बराबर था।

गौरी हाथ मुंह धोकर रसोई से बाहर आ गई। मैं उसे अपनी बांहों में दबोचने के लिए जैसे ही सोफे से उठाने लगा गौरी बोली- आप बैडरूम में चलो, मैं कपड़े बदलकर आती हूँ.
मैं सोच रहा था कि अब कपड़े बदलने की नहीं उतारने का समय है। पता नहीं गौरी देर क्यों कर रही है। मैं इस समय गौरी को किसी भी प्रकार नाराज़ नहीं करना चाहता था। मैं चुपचाप बैडरूम में आकर बिस्तर पर बैठ गया।

कोई 8-10 मिनट के बाद गौरी ने बैडरूम में प्रवेश किया। उसने वही लाल रंग की नाइटी पहन रखी थी। यह नाइटी उसके सौन्दर्य और सांचे में ढला खूबसूरत बदन ढकने में भला कहाँ समर्थ था। उसके अंग-अंग से फूटती जवानी तो हर तरफ से अपना सौंदर्य बिखेर रही थी।
मैं अपलक उसे देखता ही रह गया। एक हाथ में उसने सुनहरे रंग का दुपट्टा भी पकड़ रखा था।

मैंने उसे अपनी बांहों में भर कर अपनी गोद में बैठा लिया। गौरी ने अपनी आँखें बंद कर ली थी। उसके अधर कुछ काँप से रहे थे और साँसें तो जैसे उसके नियंत्रण में ही नहीं थी।

मैंने उसके लरजते लबों पर अपने जलते होंठ रख दिए। फिर हमारा यह चुम्बन कोई 4-5

मिनट तो जरूर चला होगा। इस बीच मैं उसके पेट जाँघों और नितम्बों पर भी हाथ फिरता रहा। मेरा लंड अब बेकाबू होने लगा था।

“गौरी मेरी जान! क्या तुम मेरी पूर्ण समर्पिता बनाने के लिए तैयार हो ?”
“हाँ मेरे साजन मैं तो सदा से ही आपकी समर्पिता हूँ मैंने कभी आपको किसी भी चीज या क्रिया के लिए मना नहीं किया। आज मुझे पूर्ण समर्पिता बना दो।”
“गौरी मैं तुम्हें वचन देता हूँ मैं कोई जोर जबरदस्ती नहीं करूंगा और ना ही तुम्हें कोई कष्ट होने दूंगा।”

“मेरे साजन! आपकी खुशी के लिए तो मैं अपनी जान भी दे सकती हूँ उसके आगे यह कष्ट कोई मायने नहीं रखता. पर मेरी एक शर्त है ?” गौरी ने अपनी आँखें मेरी आँखों में डाल कर पूछा।
हे लिंग देव! अब रोमांच के इन अंतिम पलों में गौरी ने यह क्या नया नाटक शुरू कर दिया। कहीं लौड़े तो नहीं लगने वाले!

“श … शर्त ? क … कैसी शर्त ?” मैंने हकलाते से पूछा।
“आपको मेरी एक बात माननी पड़ेगी ?” साली यह गौरी भी मधुर की संगत में रहकर उसके सारे दाव-पेंच सीख गई है और किसी भी बात को घुमा फिराकर कहने में भी माहिर हो गई है।
“ओके … बोलो।”
फिर शर्माते हुए गौरी ने कहा “आज की रात जो भी करना है वो मैं करुँगी, आप ना तो कुछ बोलेंगे और ना ही मेरे कहे बिना कुछ करेंगे.”

मेरी समझ में तो घंटा भी नहीं आया। मैं गूंगे लंड की तरह मुंह बाए बस सोचता ही रह गया।
“क … क्या … मतलब ?”

“बस आप चुपचाप बैड पर लेट जाओ। मैं आपकी आँखों पर यह दुपट्टा बाँध देती हूँ। जो भी करना होगा, मैं स्वयं करुँगी।”
“ओह …”
मैं तो हक्का बक्का सा ही रह गया। अब तो मामला शीशे की तरह बिलकुल साफ़ हो गया था।

ओह … मेरे भोले पाठको और पाठिका! आप भी नहीं समझे ना? चलो मैं संक्षेप में बता देता हूँ।
मेरे जिन पाठकों ने ‘मधुर प्रेम मिलन’ और ‘दूसरी सुहागरात’ नामक कहानी पढ़ी है वो जानते हैं कि मधुर भी अपनी महारानी का उदघाटन भी इसी प्रकार करवाकर पटरानी का खिताब हासिल किया था।

मुझे पहले तो थोड़ा संशय था पर अब तो मैं पूरे यकीन के साथ कह सकता हूँ कि मधुर ने गौरी को अपनी दूसरी सुहागरात मनाने वाली सारी बातें विस्तार से बताई होंगी और उस आनंद के बारे में भी बताया होगा जो हम दोनों ने उस रात भोगा था।

“क्या हुआ मेरे … भोले … सा..ज … न?” गौरी की आवाज सुनकर मैं चौंका।
“ओह … हाँ … ठीक है.” अब मेरे पास उसकी बात मान लेने के अलावा और क्या चारा बचा था.

कहानी जारी रहेगी.
premguru2u@gmail.com

Other stories you may be interested in

मज़हबी लड़की निकली सेक्स की प्यासी- 2

प्यासी चूत एक लड़की की … सेक्स के लिये ब्वॉयफ्रेंड की नहीं मर्द की जरूरत होती है … मुझे सेक्स चाहिये. मैंने कैसे उस बुर्कानशीं लड़की की मदद की ? प्यासी चूत एक लड़की की कहानी के पिछले भाग मज़हबी लड़की […]
Full Story >>>

मज़हबी लड़की निकली सेक्स की प्यासी- 1

देसी गर्ल की सेक्स स्टोरी में पढ़ें कि कैसे मेरे पड़ोस की एक जवान लड़की ने लॉकडाउन में मुझसे पैड मंगवाए. उसके बाद उससे बात हुई तो उसने मुझसे एक और मदद मांगी. “भाईजान एक काम कर दोगे ?” नीचे उतरते-उतरते […]
Full Story >>>

अतृप्त भतीजी और उसकी मौसी सास की चुदाई- 2

रेलगाड़ी में पब्लिक सेक्स किया मैंने अपने साले की जवान बेटी के साथ. बहुत गर्म माल थी वो ! सर्दी बहुत थी ट्रेन में … पहले उसने मेरा लंड पकड़ लिया. फिर … दोस्तो, मैं चन्दन सिंह एक बार फिर से […]
Full Story >>>

जवानी की अधूरी प्यास- 3

हिन्दी फुल सेक्सी कहानी में पढ़ें कि बड़ी उम्र के आदमी से चुदकर मेरी तसल्ली हो गयी. मैं जानती थी कि अभी वो और चुदाई करेंगे. लेकिन इस बार मेरी गांड … हिन्दी फुल सेक्सी कहानी के पिछले भाग जवानी […]
Full Story >>>

अतृप्त भतीजी और उसकी मौसी सास की चुदाई- 1

भतीजी सेक्स की इस कहानी में पढ़ें कि मुझे अपने साले की बेटी के साथ सर्दियों में ट्रेन में सफर करने का मौक़ा मिला. एक दूसरे के जिस्म की गर्मी से हमने सर्दी भगायी. दोस्तो, मैं चन्दन सिंह आज बहुत […]
Full Story >>>